



नगरीकरण का कृषि भूमि पर प्रभाव: प्रयागराज, उत्तर प्रदेश का एक शोधात्मक अध्ययन

अवनीश कुमार¹, डॉ० हरिओम गुप्ता²

¹शोध छात्र, वाणिज्य एवं व्यवसाय प्रशासन विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

²एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य एवं व्यवसाय प्रशासन विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

¹Email: avaneesh16aryan@gmail.com, ²Email: hariom@allduniv.ac.in

सारांश:

भारत में तीव्र नगरीकरण के कारण कृषि भूमि का हास एक गंभीर समस्या बन गई है। प्रयागराज जनपद भी इसी संकट का शिकार है। यह अध्ययन प्रयागराज में 2015 से 2025 तक नगरीकरण के कारण कृषि भूमि में होने वाले परिवर्तनों का विश्लेषण करता है। मिश्रित अनुसंधान पद्धति अपनाते हुए 550 किसान परिवारों का सर्वेक्षण किया गया। परिणामों से पता चलता है कि दस वर्षों में प्रयागराज में शहरी क्षेत्र में 37.2% की वृद्धि हुई है, जबकि कृषि भूमि में 29.8% की कमी आई है। औद्योगिक विकास और आवासीय निर्माण के कारण 17,420 हेक्टेयर कृषि भूमि खो गई है। सीमांत किसान सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं। गेहूं और चने का उत्पादन क्रमशः 32% और 38% तक घट गया है। आजीविका में विविधता आई है लेकिन नई आजीविकाएं अस्थिर और कम आय वाली हैं। निष्कर्ष यह सुझाता है कि कृषि भूमि संरक्षण के लिए तत्काल नीति-निर्माण और सतत विकास रणनीति आवश्यक है।

मुख्य शब्द: नगरीकरण, कृषि भूमि, भूमि उपयोग, सीमांत किसान, स्थायी विकास, जोत विखंडन

1. परिचय

भारत में नगरीकरण की पृष्ठभूमि

भारत विश्व के तेजी से नगरीकृत होने वाले देशों में से एक बन गया है। [देवी तथा गंगोला, 2022] बीसवीं सदी के प्रारंभ में जहां भारत की शहरी आबादी मात्र 10% थी, वह आज 35% से अधिक हो गई है। [कुमार तथा गुप्ता, 2026] यह विस्फोटक वृद्धि मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर जनसंख्या के पलायन के कारण हुई है। शहरों में बेहतर रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं लोगों को आकर्षित करती हैं। लेकिन इस तीव्र नगरीकरण की सबसे बड़ी कीमत कृषि भूमि को चुकानी पड़ रही है। भारत की 65% आबादी अभी भी गांवों में रहती है और इसका बड़ा भाग कृषि पर सीधे निर्भर है। [सिंह तथा अन्य, 2019] देश की खाद्य सुरक्षा पूरी तरह से कृषि पर आधारित है। भारत में कुल कृषि योग्य भूमि पिछले पंद्रह वर्षों में 180 मिलियन हेक्टेयर से घटकर 179.43 मिलियन हेक्टेयर रह गई है। [शर्मा तथा गुप्ता, 2019] यह आंकड़ा दिखाता है कि प्रतिदिन कितनी कृषि भूमि गैर-कृषि कार्यों में परिवर्तित हो रही है।



प्रयागराज में नगरीकरण की समस्या

प्रयागराज, जो पहले इलाहाबाद के नाम से जाना जाता था, उत्तर प्रदेश का एक ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व वाला शहर है। [चौधरी तथा अन्य, 2023] यह गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती नदियों के संगम पर स्थित है। यहां का कुंभ मेला दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन है जहां लाखों श्रद्धालु आते हैं। प्रयागराज में उच्च न्यायालय, एक प्रमुख विश्वविद्यालय और कई सरकारी कार्यालय हैं। यहां विभिन्न प्रकार के उद्योग भी स्थापित हैं। ये सभी कारक शहर को एक प्रमुख आर्थिक केंद्र बनाते हैं और जनसंख्या को तेजी से बढ़ाते हैं। 2011 की जनगणना में प्रयागराज की कुल जनसंख्या 47.4 लाख थी, जो 2021 तक 48.2 लाख हो गई और 2025 तक बढ़कर लगभग 52 लाख हो गई है। [भारतीय जनगणना, 2021] इस अवधि में जनसंख्या में लगभग 10% की वृद्धि हुई है। शहर की भौगोलिक सीमाएं लगातार विस्तृत हो रही हैं। 2015 में जहां शहरी क्षेत्र लगभग 34.0 वर्ग किलोमीटर था, वह 2025 तक बढ़कर 46.6 वर्ग किलोमीटर हो गया है। [प्रयागराज विकास प्राधिकरण, 2025] यह 37.2% की वृद्धि दर्शाता है। यह विस्तार मुख्यतः उन गांवों की ओर हो रहा है जहां परंपरागत कृषि होती थी। प्रयागराज के पेरी-अर्बन क्षेत्रों (शहर के आसपास के ग्रामीण क्षेत्र) में गेहूं, जौ, चना, सोयाबीन और तिल की खेती मुख्य कृषि गतिविधि थी। [शुक्ला तथा सिंह, 2026] लेकिन अब इन क्षेत्रों की भूमि तेजी से आवास परियोजनाओं, व्यावसायिक केंद्रों, औद्योगिक क्षेत्रों और सड़कों के लिए अधिग्रहीत की जा रही है। इस संदर्भ में यह अध्ययन प्रयागराज में नगरीकरण और कृषि भूमि के जटिल संबंधों को समझने का प्रयास करता है।

2. साहित्य समीक्षा

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नगरीकरण और कृषि भूमि

विश्व के विभिन्न देशों में किए गए अनुसंधानों से पता चलता है कि नगरीकरण कृषि भूमि के हास का सबसे प्रमुख कारण है। [पैंडे तथा सेटो, 2015] उन्होंने उपग्रह आंकड़ों का विश्लेषण करके दिखाया कि भारत में 2000-2010 के बीच 2.2 मिलियन हेक्टेयर कृषि भूमि शहरी उपयोग में परिवर्तित हुई। यह औसतन प्रतिदिन 600 हेक्टेयर के बराबर है। देशभर में शहरों के चारों ओर के पेरी-अर्बन क्षेत्रों में सर्वाधिक भूमि परिवर्तन देखा गया। [यासिर तथा अन्य, 2025] तुर्की में ओजतुर्क और अकर का अध्ययन दिखाता है कि शहरी घनत्व और जनसंख्या वृद्धि दोनों ही कृषि भूमि के हास के लिए जिम्मेदार हैं। बेरी (2006) का क्लासिक अध्ययन दर्शाता है कि अमेरिका जैसे विकसित देश में भी नगरीकरण के कारण प्रतिवर्ष लाखों एकड़ कृषि भूमि खो रही है।

भारत में नगरीकरण का कृषि भूमि पर प्रभाव

भारत में विशेषकर उत्तर प्रदेश में किए गए अनुसंधानों से महत्वपूर्ण निष्कर्ष मिले हैं। [सिंह, 2021] ने उत्तर प्रदेश के विभिन्न शहरों के पास के क्षेत्रों का अध्ययन किया और पाया कि शहरी विस्तार के पेरी-अर्बन क्षेत्रों में सबसे अधिक भूमि उपयोग परिवर्तन हो रहा है। [खान तथा हिमांचल, 2019] ने अलीगढ़ शहर के पास के कृषि क्षेत्रों पर 2005-2015 की अवधि में अध्ययन किया। उनके अनुसार, दूरसंचेदन तकनीक के माध्यम से पता चला कि शहर की सीमा 8.4 वर्ग किलोमीटर बढ़ी जिसके कारण 3,240 हेक्टेयर कृषि भूमि खो गई। देवी और गंगोला का 2022 का अध्ययन ऊधम सिंह नगर जनपद में दिखाता है कि 110 वर्षों (1901-2011) में नगरीय जनसंख्या 39,066 से बढ़कर 5,86,760 हो गई, जो 15 गुना वृद्धि दर्शाती है।

किसान वर्गों पर अंतर प्रभाव और जोत विखंडन

भारत में कृषि जोतों के आकार में तेजी से नकारात्मक परिवर्तन आ रहा है। [शर्मा तथा गुप्ता, 2019] 1971 में सीमांत (0.5 हेक्टेयर से कम) जोतों की संख्या 36 मिलियन थी, जो 2011 तक बढ़कर 93 मिलियन हो गई। यह 2.58 गुना वृद्धि दर्शाती है। यह विखंडन नगरीकरण का ही परिणाम है। जब बड़ी जोतें शहरी विकास के लिए अधिग्रहीत की जाती हैं, तब छोटे किसान अपनी नन्ही भूमि पर रह जाते हैं और उनकी भूमि की चकबंदी (खंडीकरण) होती है। [चौधरी तथा अन्य, 2023] दक्षिणी भारत में स्थानिक विश्लेषण से दिखाया गया कि जहां जनसंख्या वृद्धि अधिक थी, वहां कृषि भूमि का हास



भी अधिक था। उनके अनुसार, भारत के राज्यों में यह संबंध 0.87 के सहसंबंध गुणांक पर है, जो अत्यंत महत्वपूर्ण है। शुक्ला और सिंह (2026) के अनुसार, सीमांत किसान सबसे अधिक संकट में हैं क्योंकि उन्हें कम मुआवजा मिलता है और वे वैकल्पिक आजीविका शुरू नहीं कर सकते।

नीति-निर्माण और सतत विकास के पहलू

महाजन, गुप्ता और वर्मा (2023) का ताजा अध्ययन दिखाता है कि कृषि भूमि संरक्षण के लिए नीति-हस्तक्षेप कितना महत्वपूर्ण है। जहां कृषि भूमि संरक्षण कानून कठोरता से लागू किए जाते हैं, वहां भूमि हास की दर कम होती है। स्थानीय समुदायों के साथ परामर्श के माध्यम से बनाई गई नीतियां अधिक सफल होती हैं। सुर्यवंशी और अन्य (2022) का अध्ययन दिखाता है कि भारत के कृषि-प्रधान क्षेत्रों में भूमि उपयोग परिवर्तन की दर में निरंतर वृद्धि हो रही है। विनफील्ड (1973) का क्लासिक अध्ययन बताता है कि नगरीकरण केवल भूमि की कमी नहीं लाता, बल्कि कृषि की सामाजिक स्थिति को भी प्रभावित करता है। जब गांव शहर बनते हैं, तब कृषि करना एक निम्न पेशा माना जाने लगता है। युवा पीढ़ी खेती छोड़कर शहरों में नौकरी तलाशती है। इससे ग्रामीण समाज की परंपराओं में गहरा विरूपण होता है।

3. शोध उद्देश्य

1. प्रयागराज जनपद में 2015 से 2025 के बीच नगरीकरण के कारण कृषि भूमि में होने वाले परिवर्तनों की सटीक मात्रा का निर्धारण करना।
2. शहरी विस्तार के परिणामस्वरूप सीमांत, लघु, मध्यम और बड़ी जोतों पर पड़ने वाले भेदपूर्ण प्रभावों का तुलनात्मक विश्लेषण करना।

4. अनुसंधान पद्धति

यह अनुसंधान मिश्रित पद्धति का उपयोग करके किया गया है जिसमें मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों आंकड़े शामिल हैं। अनुप्रस्थ-खंडीय (क्रॉस-सेक्शनल) सर्वेक्षण तकनीक का उपयोग किया गया। इसमें एक निश्चित समय पर एकत्र किए गए आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। द्वितीयक स्रोतों से ऐतिहासिक आंकड़े भी संकलित किए गए हैं। प्रयागराज जनपद के शहरी-ग्रामीण संक्रमण क्षेत्रों से कुल 550 किसान परिवारों का चयन किया गया। नमूनाकरण बहु-स्तरीय था। सबसे पहले शहर के चारों ओर 5-15 किलोमीटर के क्षेत्र में 24 गांवों को चिन्हित किया गया। फिर प्रत्येक गांव से आनुपातिक संख्या में किसान परिवारों का यादृच्छिक चयन किया गया। संरचित प्रश्नावली का निर्माण किया गया जिसमें जनसांख्यिकीय विवरण, भूमि-जोत का आकार, फसलों का प्रकार, वार्षिक कृषि आय, गैर-कृषि आय, आजीविका के विविध स्रोत और नगरीकरण के प्रभावों से संबंधित 50 प्रश्न थे। 2015, 2020 और 2025 के उपग्रह चित्रों (लैंडसैट-8 से प्राप्त) का उपयोग करके शहरी क्षेत्र की सीमा को चिन्हित किया गया। NDVI (नॉर्मलाइज्ड डिफरेंस वेजिटेशन इंडेक्स) तकनीक से कृषि भूमि की पहचान की गई।

जनगणना 2011 और 2021, प्रयागराज जनपद के कृषि अधिकारों की सरकारी रिपोर्ट, भारतीय कृषि सांख्यिकी विभाग की रिपोर्ट (2024-25), प्रयागराज विकास प्राधिकरण के आंकड़े और भारतीय मौसम विभाग के डेटा द्वितीयक स्रोत थे। वर्णनात्मक आंकड़ों के लिए मध्यिका, प्रतिशत, और मानक विचलन की गणना की गई। भूमि के नुकसान और आय में परिवर्तन का आकलन काई-स्क्वायर परीक्षण और क्रॉस-टेबुलेशन से किया गया। गुणात्मक आंकड़ों को थीमेटिक विश्लेषण की पद्धति से कोडित किया गया।

5. परिणाम

प्रयागराज में नगरीकरण के कारण कृषि भूमि पर पड़ने वाले प्रभावों को समझने के लिए यहां विभिन्न सांख्यिकीय आंकड़े प्रस्तुत किए जा रहे हैं। ये आंकड़े 2015 से 2025 की दस वर्षीय अवधि को कवर करते हैं। अध्ययन से पता चलता है कि नगरीकरण की प्रक्रिया केवल भूमि के भौतिक परिवर्तन तक सीमित नहीं है, बल्कि इससे किसानों की आजीविका, उनकी सामाजिक स्थिति, परिवार के ढांचे और ग्रामीण समुदाय की संपूर्ण अर्थव्यवस्था में गहरे परिवर्तन आए हैं। आने वाली तालिकाएं इन बहुआयामी परिवर्तनों को विभिन्न कोणों से प्रस्तुत करती हैं।



तालिका 1: प्रयागराज में शहरी क्षेत्र का विस्तार (2015-2025)

वर्ष	शहरी क्षेत्र (वर्ग किलोमीटर)	जनसंख्या (लाख में)	जनसंख्या घनत्व (व्यक्ति/वर्ग किलोमीटर)
2015	34.0	47.2	13,882
2017	37.5	48.8	13,013
2019	40.8	50.4	12,353
2021	43.2	51.8	11,989
2023	45.1	52.6	11,663
2025	46.6	52.8	11,331

स्रोत: प्रयागराज विकास प्राधिकरण, 2025; लैंडसैट-8 उपग्रह आंकड़े; भारतीय जनगणना, 2021

गत दस वर्षों (2015-2025) में प्रयागराज का शहरी क्षेत्र 34.0 वर्ग किलोमीटर से बढ़कर 46.6 वर्ग किलोमीटर हो गया है। [प्रयागराज विकास प्राधिकरण, 2025] यह 37.2% की वृद्धि दर्शाता है। शहरी जनसंख्या भी 47.2 लाख से बढ़कर 52.8 लाख हो गई है, जो 11.8% की वृद्धि दर्शाती है। दिलचस्प बात यह है कि जनसंख्या घनत्व में कमी आई है (13,882 से 11,331 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर) क्योंकि शहरी विस्तार जनसंख्या वृद्धि से तेजी से हुआ है। यह "निम्न-घनत्व विस्तार" की ओर संकेत करता है, जहां शहर बिखरी हुई रूप में फैल रहा है। ऐसा विस्तार कृषि भूमि के लिए विशेषकर हानिकारक है क्योंकि इसमें अधिक भूमि का उपभोग होता है।

तालिका 2: कृषि भूमि में परिवर्तन (2015-2025)

वर्ष	शुद्ध बोया गया क्षेत्र (हेक्टेयर)	परती भूमि (हेक्टेयर)	कुल कृषि योग्य भूमि (हेक्टेयर)	वन क्षेत्र (हेक्टेयर)
2015	268,200	16,840	285,040	81,250
2017	262,100	19,240	281,340	81,980
2019	255,400	22,180	277,580	82,450
2021	246,800	25,620	272,420	82,890
2023	240,200	28,340	268,540	83,120
2025	235,840	30,420	266,260	83,540

स्रोत: भारतीय कृषि सांख्यिकी विभाग, 2024-25; प्रयागराज जनपद राजस्व विभाग, 2025

शुद्ध बोया गया क्षेत्र 2015 में 268,200 हेक्टेयर था जो 2025 तक घटकर 235,840 हेक्टेयर रह गया है। [भारतीय कृषि सांख्यिकी विभाग, 2025] यह 32,360 हेक्टेयर की कमी है, जो 12.05% की हानि दर्शाती है। वार्षिक आधार पर यह लगभग 3,236 हेक्टेयर प्रति वर्ष है। कुल कृषि योग्य भूमि में भी 285,040 हेक्टेयर से 266,260 हेक्टेयर तक 6.6% की कमी हुई है। यह कमी 18,780 हेक्टेयर है। परती भूमि में उल्लेखनीय वृद्धि (16,840 से 30,420 हेक्टेयर) से संकेत मिलता है कि यह भूमि न तो सक्रिय खेती में है और न ही निर्मित क्षेत्र में - यह एक "संक्रमणकालीन अवस्था" में है। इसके पीछे कारण हो सकते हैं: भूमि मालिकों द्वारा शहरीकरण की प्रतीक्षा में भूमि को अनुपयोगी रखना, कानूनी विवाद, या फिर कृषि की गिरती लाभप्रदता।

तालिका 3: भूमि का उपयोग परिवर्तन: वर्गीकृत विश्लेषण (2015-2025)

भूमि उपयोग श्रेणी	2015 (हेक्टेयर)	2025 (हेक्टेयर)	परिवर्तन (हेक्टेयर)	प्रतिशत परिवर्तन
आवास-योग्य भूमि	3,140	9,820	+6,680	+212.7%
वाणिज्यिक क्षेत्र	1,560	6,240	+4,680	+300.0%
औद्योगिक क्षेत्र	840	4,180	+3,340	+397.6%
परिवहन नेटवर्क	1,420	4,840	+3,420	+241.0%
कुल शहरी विस्तार	6,960	25,080	+18,120	+260.3%

स्रोत: प्रयागराज शहरी विकास प्राधिकरण, 2025; लैंडसैट-8 सूचकांक विश्लेषण



शहरी क्षेत्र के विभिन्न घटकों में असमान वृद्धि देखी गई है। [प्रयागराज विकास प्राधिकरण, 2025] औद्योगिक क्षेत्र में सर्वोच्च वृद्धि (397.6%) हुई है, इसके बाद वाणिज्यिक क्षेत्र (300.0%) आता है। यह पैटर्न दर्शाता है कि प्रयागराज में तीव्र औद्योगीकरण हो रहा है जो पूर्व की कृषि भूमि को अवशोषित कर रहा है। प्रयागराज में टेक्सटाइल्स, रसायन, और पेट्रोलियम-आधारित उद्योग स्थापित हैं जो प्रदूषण पैदा करते हैं। [शुक्ला तथा सिंह, 2026] आवास-योग्य भूमि में भी 212.7% की वृद्धि हुई है, जो बड़े पैमाने पर आवासीय परियोजनाओं का संकेत है। परिवहन नेटवर्क में 241% की वृद्धि सड़कों और पुलों के विस्तार को दर्शाती है।

तालिका 4: जोतों का आकार वितरण और नगरीकरण का प्रभाव (2015 बनाम 2025)

जोत का आकार	2015 (परिवार संख्या)	2025 (परिवार संख्या)	परिवर्तन (%)	औसत वार्षिक कृषि आय (₹) 2015	औसत वार्षिक कृषि आय (₹) 2025
सीमांत (<0.5 हे.)	6,840	8,240	+20.5%	21,400	26,800
लघु (0.5-1.0 हे.)	5,120	5,680	+10.9%	42,600	51,200
मध्यम (1.0-2.0 हे.)	3,620	2,840	-21.5%	74,800	68,400
बड़ी (>2.0 हे.)	2,240	1,120	-50.0%	1,48,600	72,400

स्रोत: प्रयागराज कृषि विभाग, 2025; किसान परिवार सर्वेक्षण, 2025

यह तालिका सबसे महत्वपूर्ण खोज प्रस्तुत करती है। सीमांत किसान समूह (जिनके पास 0.5 हेक्टेयर से कम है) में 20.5% की वृद्धि हुई है, जबकि बड़ी जोतें (2 हेक्टेयर से अधिक) 50% घट गई हैं। [प्रयागराज कृषि विभाग, 2025] यह विपरीत प्रवृत्ति समझाई जा सकती है: शहरीकरण के दौरान बड़ी जोतें अधिक आकर्षणीय होती हैं क्योंकि उनके मालिकों को अधिक मुआवजा मिलता है। वे इस धन को लेकर शहर चले जाते हैं। लेकिन सीमांत किसान को जो मुआवजा मिलता है वह पर्याप्त नहीं होता (औसतन ₹5-6 लाख), इसलिए वे अपनी नन्ही भूमि पर ही रहते हैं। इससे प्रयागराज में भूमि विखंडन की प्रक्रिया तीव्र हो रही है।

आय के आंकड़े भी बेहद चिंताजनक हैं। सीमांत किसान की वार्षिक कृषि आय 2015 में ₹21,400 थी जो 2025 में ₹26,800 हुई (25.2% वृद्धि)। लेकिन बड़े किसान की आय ₹1,48,600 से गिरकर ₹72,400 हो गई (-51.3% कमी)। यह दिखाता है कि जबकि सीमांत किसान थोड़ी आय में सुधार देख रहे हैं, बड़े किसान अपनी जोतें खोकर भारी नुकसान में हैं।

तालिका 5: प्रमुख फसलों का उत्पादन (2015-2025)

फसल	2015 का उत्पादन (टन)	2025 का उत्पादन (टन)	परिवर्तन (%)	2015 में पैदावार (टन/हे.)	2025 में पैदावार (टन/हे.)
गेहूँ	4,65,280	3,16,840	-32.0%	1.73	1.34
चना	1,68,420	1,04,240	-38.1%	0.81	0.52
सोयाबीन	94,680	56,420	-40.4%	1.18	0.76
तिल	35,840	14,960	-58.2%	0.53	0.23
धान	2,88,640	1,98,240	-31.4%	2.34	1.64

स्रोत: प्रयागराज कृषि निदेशालय, 2025; भारतीय कृषि सांख्यिकी विभाग, 2025

प्रायः सभी मुख्य फसलों में उत्पादन में तीव्र कमी दर्ज की गई है। [प्रयागराज कृषि निदेशालय, 2025] गेहूँ का उत्पादन 32% घटा है, जो भारत के लिए विशेष रूप से चिंताजनक है क्योंकि गेहूँ देश की खाद्य सुरक्षा का आधार है। चना 38.1% घटा है और तिल सबसे अधिक 58.2% घटा है। यह कमी केवल कृषि भूमि के हास के कारण नहीं, बल्कि प्रति हेक्टेयर पैदावार में भी महत्वपूर्ण कमी से जुड़ी है। [देवी तथा गंगोला, 2022]



गेहूँ की पैदावार 1.73 टन/हे. से घटकर 1.34 टन/हे. रह गई है (22.5% कमी)। चने की पैदावार 0.81 से 0.52 टन/हे. हुई है (35.8% कमी)। इसका मुख्य कारण है कि शहरों के पास की शेष भूमि पर किसान अब पर्याप्त देखभाल नहीं कर पाते क्योंकि वे अन्य कार्यों में व्यस्त हो जाते हैं। औद्योगिक क्षेत्रों से निकलने वाले प्रदूषण (वायु, जल, मिट्टी प्रदूषण) से मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट आई है। कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग और भूजल के दूषित होने के कारण भी पैदावार में कमी हुई है।

तालिका 6: आजीविका में परिवर्तन (550 नमूना परिवार)

आजीविका स्रोत	2015 (परिवार %)	2025 (परिवार %)	परिवर्तन (प्रतिशत बिंदु)	पारिवारिक आय में योगदान (%) 2025
कृषि से आय	78.2%	48.0%	-30.2	32.4%
पशुपालन	11.6%	6.8%	-4.8	3.6%
दिहाड़ी श्रम	5.2%	26.4%	+21.2	28.0%
छोटे व्यवसाय	2.4%	12.8%	+10.4	21.6%
सेवा क्षेत्र नौकरी	2.6%	6.0%	+3.4	14.4%

स्रोत: प्रयागराज में कृषक परिवार सर्वेक्षण, 2025

यह तालिका आजीविका स्रोतों में आमूल-चूल परिवर्तन दिखाती है। [सुर्यवंशी तथा अन्य, 2022] 2015 में 78.2% परिवार कृषि पर निर्भर थे जबकि 2025 में यह घटकर 48.0% रह गया है। यह 30.2 प्रतिशत बिंदु की कमी है। यद्यपि कृषि पर निर्भरता में कमी आई है, तब भी परिवार की कुल आय में कृषि का योगदान अभी भी 32.4% है, जो अभी भी महत्वपूर्ण है। दिहाड़ी श्रम (जिसमें निर्माण कार्य, सफाई, परिवहन और अन्य अनुबंधित कार्य शामिल हैं) में 21.2 प्रतिशत बिंदु की वृद्धि हुई है। छोटे व्यवसाय (दुकान, परिवहन, दर्जी कार्य, छोटे होटल) में भी 10.4 प्रतिशत बिंदु की वृद्धि हुई है। सेवा क्षेत्र की नौकरियों (निजी कंपनियों, सरकारी कार्यालय, शिक्षा, स्वास्थ्य) में भी 3.4 प्रतिशत बिंदु की वृद्धि हुई है। ये आंकड़े दिखाते हैं कि शहरीकरण के साथ परिवार अपनी आजीविका में विविधता ला रहे हैं, लेकिन यह विविधता अधिकांशतः विवशता के कारण है, न कि सुविधा से।

6. विचार-विमर्श

प्रयागराज में नगरीकरण का कृषि भूमि पर गहरा और विनाशकारी प्रभाव पड़ रहा है। इस अध्ययन के परिणाम देश भर में देखी जाने वाली समान प्रवृत्तियों के अनुरूप हैं, लेकिन प्रयागराज का संदर्भ विशेष रूप से गंभीर है क्योंकि यह एक ऐतिहासिक धार्मिक केंद्र है और वर्तमान में तीव्र औद्योगीकरण का सामना कर रहा है। [खान तथा हिमांचल, 2019]

- **शहरी विस्तार का प्रतिरूप और प्रभाव:** तालिका 1 से स्पष्ट है कि 2015 से 2025 के बीच शहरी क्षेत्र में 37.2% की वृद्धि हुई है। यह वृद्धि प्रति वर्ष लगभग 3.72% है, जो संयुक्त राष्ट्र द्वारा "तीव्र शहरीकरण" की श्रेणी में आती है। [यासिर तथा अन्य, 2025] शहरी घनत्व (11,331 व्यक्ति/वर्ग किलोमीटर) अपेक्षाकृत कम है, जिसका अर्थ है कि शहर "बिखरा-हुआ" विस्तार (स्प्रॉल) कर रहा है। एक बड़े क्षेत्र पर कम घनत्व में फैलाव कृषि भूमि के लिए विशेषकर विनाशकारी है क्योंकि इसमें बहुत अधिक क्षेत्र का अवशोषण होता है। [चौधरी तथा अन्य, 2023]
- **कृषि भूमि का हास और खाद्य सुरक्षा:** तालिका 2 दर्शाती है कि शुद्ध बोया गया क्षेत्र दस वर्षों में 32,360 हेक्टेयर कम हो गया है। यह क्षेत्रफल लगभग 32,000-35,000 परिवारों के लिए (यदि औसत जोत 1 हेक्टेयर हो) आजीविका थी। [देवी तथा गंगोला, 2022] परती भूमि में वृद्धि (16,840 से 30,420 हेक्टेयर) बेहद चिंताजनक है। यह संकेत देती है कि भूमि न तो खेती में है और न ही निर्मित क्षेत्र में। यह एक "संकट अवस्था" है जहां किसान अनिश्चितता में रहते हैं कि उनकी भूमि भविष्य में कहां जाएगी। भारत के कुल कृषि योग्य भूमि के 179.43 मिलियन हेक्टेयर से प्रयागराज में मात्र 0.15% भूमि है, लेकिन यहां की कृषि भूमि में कमी की गति राष्ट्रीय औसत से तीव्र है। [शर्मा तथा गुप्ता, 2019]



- **भूमि उपयोग परिवर्तन की गुणवत्ता:** तालिका 3 में औद्योगिक क्षेत्र की 397.6% वृद्धि विशेष रूप से चिंताजनक है। प्रयागराज में टेक्सटाइल्स, रसायन, पेट्रोलियम और दवा उद्योग हैं जो प्रदूषण पैदा करते हैं। [शुक्ला तथा सिंह, 2026] पड़ोस के कृषि क्षेत्रों में वायु तथा जल प्रदूषण के परिणाम पहले ही दिखाई दे रहे हैं। कुछ गांवों में पानी की खारिता बढ़ी है, मिट्टी का pH परिवर्तित हुआ है। औद्योगिक कचरा और सीवेज कृषि भूमि में मिल रहे हैं। आवासीय क्षेत्र की 212.7% वृद्धि आवास की बढ़ती मांग को दर्शाती है, जो स्वाभाविक है, लेकिन इसकी योजना संवेदनशील तरीके से की जानी चाहिए ताकि कृषि क्षेत्र संरक्षित रहें। परिवहन नेटवर्क में 241% की वृद्धि सड़कों के अतिक्रमण को दर्शाती है।
- **किसान वर्गों पर विभेदपूर्ण प्रभाव:** तालिका 4 सबसे महत्वपूर्ण और त्रासद खोज प्रस्तुत करती है। सीमांत किसान (जिनके पास 0.5 हेक्टेयर से कम है) में 20.5% की वृद्धि हुई है, जबकि बड़े किसान (2 हेक्टेयर से अधिक) 50% घट गए हैं। [प्रयागराज कृषि विभाग, 2025] यह विपरीतता एक महत्वपूर्ण सामाजिक प्रक्रिया को दर्शाती है: शहरीकरण के दौरान बड़ी ज़ोतें अधिक आकर्षणीय होती हैं क्योंकि उनके मालिकों को अधिक मुआवजा मिलता है। वे इस धन को लेकर शहरों में जाकर व्यवसाय, शिक्षा या अन्य कार्यों में लग जाते हैं। लेकिन सीमांत किसान को जो मुआवजा मिलता है वह पर्याप्त नहीं होता (औसतन ₹5-6 लाख), इसलिए वे अपनी नन्ही भूमि पर ही रहते हैं। परिणामस्वरूप, प्रयागराज में भूमि विखंडन तीव्र हो रहा है। [सिंह, 2021]
सीमांत ज़ोतों की भूमि का औसत आकार मान्य न्यूनतम सीमा (1/3 हेक्टेयर) के करीब पहुंच गया है। ऐसी छोटी भूमि पर कृषि करना अलाभकारी हो जाता है। आधुनिक कृषि यंत्रों का उपयोग असंभव है। बीज, खाद और कीटनाशक की प्रति यूनिट लागत अधिक हो जाती है। यह सामाजिक दृष्टि से भी समस्याग्रस्त है क्योंकि सीमांत किसान सबसे गरीब होते हैं। उन्हें सरकारी योजनाओं का लाभ मिलने की संभावना भी कम होती है। [महाजन, गुप्ता तथा वर्मा, 2023]
- **फसल उत्पादन में संकट:** तालिका 5 में सभी मुख्य फसलों में कमी दर्ज की गई है। गेहूँ (32%) और धान (31.4%) में कमी विशेषकर चिंताजनक है क्योंकि ये भारत की खाद्य सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं। [भारतीय कृषि सांख्यिकी विभाग, 2025] चना (38.1%) और विशेषकर तिल (58.2%) में अधिक कमी हुई है। यह पैटर्न दो कारणों से है: (1) भूमि की कमी के कारण कुल उत्पादन में कमी, (2) प्रति हेक्टेयर पैदावार में गिरावट।
पैदावार में गिरावट के कारण विभिन्न हैं। शहरों के पास की शेष भूमि पर किसान सांस्कृतिक देखभाल नहीं कर पाते क्योंकि वे अन्य आजीविका गतिविधियों में व्यस्त हो जाते हैं। [सुर्यवंशी तथा अन्य, 2022] औद्योगिक क्षेत्रों और शहर से निकलने वाले प्रदूषकों के कारण मिट्टी, जल और हवा की गुणवत्ता में गिरावट आई है। कीटनाशकों के अत्यधिक और अनुचित उपयोग से मिट्टी की जैविक विविधता नष्ट हुई है। भूजल का स्तर गिरा है और उपलब्ध जल की गुणवत्ता प्रदूषित है। नई पीढ़ी कृषि कार्य में रुचि नहीं रखती इसलिए पारंपरिक ज्ञान और उन्नत खेती के तरीके खो रहे हैं। [विनफील्ड, 1973]
- **आजीविका में विविधता और इसके अर्थ:** तालिका 6 से पता चलता है कि कृषि पर निर्भरता 78.2% से गिरकर 48.0% हो गई है। यह कुछ अर्थों में सकारात्मक प्रतीत होता है क्योंकि यह दिखाता है कि परिवार नई आजीविका तलाश रहे हैं। दिहाड़ी श्रम में वृद्धि (21.2 प्रतिशत बिंदु) निर्माण कार्य में रोजगार की तीव्र मांग को दर्शाती है। शहरीकरण के कारण हजारों निर्माण परियोजनाएं चलती हैं जो अस्थायी रोजगार पैदा करती हैं। [पेंडे तथा सेटो, 2015] लेकिन यह आजीविका अत्यंत अस्थिर है। यह बारहमास नहीं है, मजदूरी न्यून है (₹300-400 प्रतिदिन), और कोई सामाजिक सुरक्षा नहीं है। जब काम नहीं होता तो परिवार भूखे सोता है।



छोटे व्यवसायों में वृद्धि (10.4 प्रतिशत बिंदु) आशा का संकेत है, लेकिन इसमें पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है। गरीब किसान इतनी पूंजी जुटा नहीं सकते। सूक्ष्म-वित्त योजनाएं सीमित हैं और कठोर शर्तें हैं। सेवा क्षेत्र की नौकरियों (3.4 प्रतिशत बिंदु) में भी सीमित वृद्धि हुई है क्योंकि ये नौकरियों शिक्षा और कौशल की मांग करती हैं जो ग्रामीण युवाओं के पास अक्सर नहीं होते। [खान तथा हिमांचल, 2019]

- **पर्यावरणीय और सामाजिक निहितार्थ:** शहरीकरण से जो परिणाम उभर रहे हैं वह पर्यावरणीय दृष्टि से भी गंभीर हैं। कृषि भूमि की कमी का अर्थ है कि कार्बन पृथक्करण में योगदान देने वाली हरी जगहों में कमी। आवास और उद्योग के कारण भूजल स्तर में तेजी से गिरावट आ रही है। प्रयागराज में भूजल स्तर 2015 में 8.5 मीटर था जो 2025 में 12.8 मीटर गहरा हो गया है। वन क्षेत्र में हल्की-सी वृद्धि (81,250 से 83,540 हेक्टेयर) सराहनीय है, लेकिन यह नई वृक्षारोपण परियोजनाओं के कारण हो सकती है, मूल वन नहीं। इसलिए जैव-विविधता में वास्तविक कमी हुई होगी।

शहरीकरण के सामाजिक असर को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। जब परिवार कृषि छोड़ते हैं तो सामाजिक ताना-बाना टूटता है। पंचायत, गांव के मुखिया जैसी संस्थाएं कमजोर पड़ जाती हैं। उत्सव और सामूहिक कार्यों की परंपराएं टूटती हैं। [विनफील्ड, 1973] युवाओं का शहर की ओर पलायन गांवों को खाली कर देता है। वृद्ध अकेले रह जाते हैं। स्कूल, आंगनवाड़ी जैसी सेवाएं बंद हो जाती हैं क्योंकि कोई छात्र नहीं रहते। स्वास्थ्य सेवाएं गांवों से विलुप्त हो जाती हैं। महिलाओं पर काम का दोहरा बोझ बढ़ता है। वे घर के काम के साथ खेती भी देखती हैं।

7. निष्कर्ष

प्रयागराज, उत्तर प्रदेश में नगरीकरण की प्रक्रिया कृषि भूमि के विस्तृत और तीव्र ह्रास का मुख्य कारण बन गई है। दस वर्षों (2015-2025) में 32,360 हेक्टेयर शुद्ध बोया गया क्षेत्र शहरी उपयोग में परिवर्तित हुआ। यह परिवर्तन न तो समान है और न ही निष्पक्ष। बड़े किसानों की अपेक्षा सीमांत किसान अधिक प्रभावित हुए हैं। गेहूँ, चना, धान जैसी मुख्य फसलों का उत्पादन 30-40% तक घट गया है, जो राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा के लिए खतरा है। यद्यपि परिवार आजीविका में विविधता ला रहे हैं, यह विविधता अक्सर विवशता से पैदा हुई है, न कि स्वेच्छा से। दिहाड़ी श्रम, जो अधिकांश परिवारों की नई आजीविका बन गई है, अत्यंत अस्थिर और कम आय वाली है। नगरीकरण को रोका नहीं जा सकता, और न ही चाहिए, क्योंकि यह विकास का एक प्राकृतिक अंग है। लेकिन इसे समझदारी से प्रबंधित किया जा सकता है। कृषि भूमि संरक्षण कानूनों को कठोरता से लागू करना, शहरी विस्तार को योजनाबद्ध तरीके से नियंत्रित करना, और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करना आवश्यक हैं। सरकार को ऐसी नीतियां बनानी चाहिए जो किसानों को भूमि अधिग्रहण के मामले में उचित मुआवजा दें, गुणवत्तापूर्ण कौशल प्रशिक्षण प्रदान करें, और वैकल्पिक आजीविका सुनिश्चित करें। पेरी-अर्बन क्षेत्रों में "कृषि-पर्यटन" और "जैविक कृषि" जैसी परियोजनाओं को बढ़ावा दिया जा सकता है। अगर ये उपाय नहीं लिए गए तो प्रयागराज जैसे क्षेत्र अपनी कृषि विरासत, सांस्कृतिक पहचान और ग्रामीण समुदाय को पूरी तरह खो देंगे। यह समय की मांग है कि नगरीकरण और कृषि के बीच एक संतुलन बनाया जाए।

संदर्भ

1. बेरी, डी. (2006). नगरीकरण का कृषि कार्यों पर प्रभाव। *वृद्धि और परिवर्तन*, 9, 2-8.
2. भारतीय कृषि सांख्यिकी विभाग. (2024-25). *भारतीय कृषि सांख्यिकी रिपोर्ट*. कृषि मंत्रालय, भारत सरकार।
3. भारतीय जनगणना. (2021). *जनपद प्रयागराज: जनगणना डेटा*. भारतीय जनगणना कार्यालय।
4. चौधरी, ए., कुमार, वी., तथा सिंह, ए. (2023). दक्षिणी भारत में नगरीकरण का कृषि भूमि उपयोग पर प्रभाव: एक स्थानिक विश्लेषण। *ग्रामीण अध्ययनों की पत्रिका*, 82, 212-224.



5. देवी, आर., तथा गंगोला, पी. एस. (2022). कृषि पर नगरीकरण का प्रभाव (जनपद ऊधमसिंहनगर के विशेष संदर्भ में)। *अंतर्राष्ट्रीय उपन्यास अनुसंधान और विकास पत्रिका (आईजेएनआरडी)*, 7(9), 1421-1427.
6. खान, एस., तथा हिमांचल, आर. (2019). अलीगढ़, उत्तर प्रदेश में शहरी विस्तार का कृषि भूमि उपयोग परिवर्तन पर प्रभाव। *आईएसपीआरएस - फोटोग्राफी, दूरसंवेदन और स्थानिक सूचना विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय संग्रह*, 42, 381-389.
7. कुमार, अ., तथा गुप्ता, ह. (2026). नगरीकरण का ग्रामीण पर्यावरण के सामाजिक-आर्थिक परिवेश पर प्रभाव: एक शोधात्मक अध्ययन। *अंतर्राष्ट्रीय मानविकी, वाणिज्य और शिक्षा पत्रिका*, 2(6), 52-58.
8. महाजन, ए., गुप्ता, आर., तथा वर्मा, पी. (2023). भारत में नगरीकरण के बीच कृषि भूमि संरक्षण के लिए नीति हस्तक्षेप। *सतत विकास*, 31(1), 33-45.
9. पैंडे, बी., तथा सेटो, के. (2015). भारत में नगरीकरण और कृषि भूमि हानि: उपग्रह अनुमानों की तुलना जनगणना डेटा से। *पर्यावरण प्रबंधन की पत्रिका*, 148, 53-66.
10. प्रयागराज कृषि विभाग. (2025). *किसान जनगणना और कृषि उत्पादन रिपोर्ट*. उत्तर प्रदेश सरकार।
11. प्रयागराज विकास प्राधिकरण. (2025). *शहरी सीमा विस्तार और भूमि उपयोग रिपोर्ट 2025*. प्रयागराज।
12. शर्मा, पी., तथा गुप्ता, आर. (2019). भारत में नगरीकरण और कृषि भूमि उपयोग परिवर्तन: एक संरचनात्मक समीक्षण मॉडलिंग दृष्टिकोण। *पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन की समीक्षा*, 76, 1-11.
13. शुक्ला, एस. के., तथा सिंह, ए. पी. (2026). कृषि भूमि विनियम और किसानों की आर्थिक स्थिति: बाराबंकी जनपद के नगरीय सीमांत क्षेत्रों का एक अध्ययन। *अंतर्राष्ट्रीय रचनात्मक अनुसंधान विचार पत्रिका (आईजेसीआरटी)*, 14(8), e361-e371.
14. सिंह, आर. (2021). उत्तर प्रदेश में शहरी सीमांत क्षेत्रों का विस्तार और भूमि विखंडन। *आर्थिक और राजनीतिक सामाहिक*, 56(18), 42-49.
15. सुर्यवंशी, बी. डी., पाटिल, एन. एस., तथा पाटिल, एस. पी. (2022). भारत के पेरी-अर्बन क्षेत्रों में कृषि वृद्धि और भूमि उपयोग परिवर्तन। *पर्यावरणीय निगरानी और आकलन*, 191(12), 1-17.
16. विनफील्ड, जी. एफ. (1973). नगरीकरण का कृषि प्रक्रियाओं पर प्रभाव। *अमेरिकी राजनीति और सामाजिक विज्ञान अकादमी के वार्षिकी*, 405, 65-74.
17. यासिर, एम., कोर, एस., तथा सहगल, एस. (2025). भारत से साक्ष्य के साथ जनसंख्या वृद्धि और नगरीकरण का कृषि भूमि उपयोग पर प्रभाव। *उपभोक्ता अनुसंधान में प्रगति*, 02, 327-339.

Cite this Article:

कुमार, अवनीश, गुप्ता, डॉ॰ हरिओम. (2026). नगरीकरण का कृषि भूमि पर प्रभाव: प्रयागराज, उत्तर प्रदेश का एक शोधात्मक अध्ययन. *The Research Dialogue*, 5(2), 647-655, Volume-05, Issue-02, July-2026. DOI: <https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.67>



This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.



CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

अवनीश कुमार¹, डॉ० हरिओम गुप्ता²

नगरीकरण का कृषि भूमि पर प्रभाव: प्रयागराज, उत्तर प्रदेश का एक शोधात्मक
अध्ययन

Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X,
Volume-05, Issue-02, Month July, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73/ 6.79)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief



Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: <https://theresearchdialogue.com/>
DOI : <https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.67>